MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक संशोधन पत्रिका

विद्यावार्ता™

UGC Approved
Jr.No.62759

Special Issue
January 2018

कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, तलेगाव दिघे, हिंदी विभाग

&

नियोजन व विकास मंडळ,

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

के संयुक्त तत्वाधान में

हिंदी विभाग आयोजित

राज्यस्तरीय संगोष्ठी

दिनांक १८ जनवरी २०१८

२१ वीं सदी के गद्य साहित्य में जीवन मूल्य

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post. Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

http://www.vidyawarta.blogspot.com | http://vidyawartajournal...

|| Index ||

1) सुधा अरोड़ा की कहानियों में जीवन मूल्य
अनंत नानाजी केदारे || 08

2)२१ वी सदी की कहानी में अभिव्यक्त पारिवारीक जीवन मूल्य
डॉ.बी.टी. शेणकर || 13

3) सामाजिक एवं राजनीतिक मूल्यों की बेबाक अभिव्यक्ति– 'बैल बाजी मार ...
प्रकाश सावंत || 16

4)'मै हिंदु हूँ ' कहानी में बदलते जीवनमूल्य
फुलमाली बालासाहेब आप्पा || 19

5) 'मंदिर' कहानी में चित्रित जीवनमूल्य
डॉ.शशि साळुंखे || 21

6) समकालीन हिन्दी नाटकों में मूल्यबोध
डॉ.अनिता वेताळ/अंत्रे || 23

7) जयप्रकाश कर्दम के कहानी संग्रह में जीवनमूल्य (खरोंच के संदर्भ में)
संदिप दामू तपासे || 25

8) इक्कीसवीं सदी के कहानी साहित्य में जीवन मूल्य
डॉ.बाचकर बाबासाहेब धोंडीराम || 27

9) हिंदी उपन्यासों में नारी चेतना
डॉ.बुक्तरे मिलिंदराज || 29

10) जीवनगत प्रश्नों से मुटभेड करती कहानियाँ विशेष संदर्भ – कथाकार अमरकांत
नारायणराव हिरडे–डॉ.योगेश दाणे || 31

11) उदय प्रकाश की 'तिरिछ' कहानी में जीवन मूल्य
तांबे दिपाली दत्तात्रय || 36

12) समकालीन कहानी का मूल्योन्मुख पक्ष
डॉ.भाऊसाहेब नवनाथ नवले || 39

10

जीवनगत प्रश्नों से मुठभेड करती कहानियाँ (विशेष संदर्भ – कथाकार अमरकांत)

प्रा. नारायणराव हिरडे
हिंदी विभाग अध्यक्ष
महाराजा जिवाजीराव शिंदे महाविदयालय,
श्रीगोंदा, जि. अहमदनगर,

प्रा. डॉ. योगेश दाणे
सहा. प्राध्यापक हिंदी विभाग
एस.एस.जी.एम. कॉलेज, कोपरगांव

****

प्रस्तावना –

'मूल्य' यदयापि दर्शनशास्त्र, समाज शास्त्र, और मनोविज्ञान की विषय सामग्री है, परंतु मानव जीवन सापेक्ष होने के कारण साहित्य में मानव मूल्य समाविष्ट होते हैं। अत: साहित्य और मानवमूल्यों अथवा जीवन मूल्यों का घनिष्ठ संबंध है। साहित्य का स्रष्टा मानव है और मानव जीवन का अंकन ही साहित्य का उददेश्य है। साहित्य के द्वारा ही मानव जीवन के समस्त पहलुओं का लेखा जोखा निहित होता है। वास्तव में हम कह सकते है कि साहित्य मानव जीवन की विशेष अभिव्यक्ति है। दरअसल, साहित्य को जीवन से अलग करके नहीं रख सकते, क्योंकि साहित्य का विषय ही मानव जीवन है। अत: मानव जीवन के मूल्यों को इसमें स्थान मिलना स्वाभाविक है। डॉ. शंभुनाथ सिंह के अनुसार ''साहित्य में जीवन मूल्य ऊपर से आरोपित नहीं होते, बल्कि वे साहित्यकार के रुप में स्वीकृत किए जाते है।''१ इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि जीवन मूल्यों को साहित्य से पृथक नहीं किया जा सकता। साहित्य के मूल्य और जीवन के मूल्यों के [illegible] नहीं हो सकते। साहित्य में भले ही किसी शाश्वत सिध्दांत या सार्वभौम दर्शन का प्रयोग किया जाए, जीवन मूल्यों की उपेक्षा करके वास्तविक निष्कर्षों तक नहीं पहुँचा जा सकता। साहित्य में अभिव्यक्त होकर ही जीवनमूल्य साहित्यिक मूल्य कहलाते हैं। अत: ''साहित्यिक मूल्य और जीवन मूल्य भी दो विभिन्न कोटियाँ नही, बल्कि तत्वत: एक ही है।''२

साहित्य एवं समाज का परस्पर सम्बन्ध है। साहित्य में ही जीवन एवं समाज प्रतिबिंबित होता है। साहित्यकार समाज में रहता है। अत:सामाजिक, सांस्कृतिक, परिस्थितियां उसे पूर्णत: प्रभावित करती है। संक्षेप में कहा जाए तो साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्यकार जो देखता है, अनुभव करता है, उसे अपने विचारों के माध्यम से साहित्य में अभिव्यक्त करता है। प्राचीनकाल से लेकर आज तक अनेक प्रकार के साहित्य का सृजन हुआ है। साहित्यकारों ने अपनी कृतियों का सृजन समाज की कोई न कोई घटना को केंद्र में रखकर किया है। कहानीकार अमरकांत जी ने लेखन की सामाजिक प्रतिबध्दता को स्पष्ट करते हुए लिखा है – ''एक लेखक को समाज से हमारा गहरा संपर्क रखना चाहिए, क्योंकि भाषा या नई भाषा समाज से मिलती है। कल्पना से भाषा नहीं लिखी जा सकती। वास्तविक भाषा होनी चाहिए । उसमें संकेत वगैरह होने चाहिए । 'संवेदना' गहरी होनी चाहिए! क्योंकि बिना संवेदना के कहानी भाषा नही बनेगी।''३ वास्तव में कहा जाए तो साहित्य के प्रत्येक रुप में देशकाल, वातावरण, युगीन परिस्थितियों का प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से अवश्य पडता है। इसी प्रभाव के फलस्वरुप सच्चे साहित्य का निर्माण होता है, और यह मानवीय जीवनमूल्यों के साथ साथ राष्ट्रीय भावधारा का भी पलवन करता है। साहित्य के जीवन मूल्य जीवन की उस मूल्यवत्ता का प्रतीक है जिसे कोई युग सहर्ष स्वीकार करता है। बाबु गुलाबराय का मानना है – ''साहित्य के मूल्य जीवन के मूल्य से भिन्न नहीं है। अत: यह

बात सर्वमान्य है कि जिसका जीवन में मूल्य है, उसका साहित्य में भी मूल्य है।''४ कुलमिलाकर कहा जा सकता है कि जीवन मूल्यों और साहित्य का बडा घनिष्ठ संबंध है। मूल्यों के अभाव में साहित्य उसी प्रकार निष्प्राण हो जाता है, जिस प्रकार आत्मा के अभाव में शरीर शव बन जाता है। जाहिर है कि साहित्य और जीवन तथा साहित्य और मूल्यों का संबंध मानव के संदर्भ में प्राचीन काल से है और अंत समय तक रहेगा।

साहित्यकारों ने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, कविता आदि में अपनी लेखनी चलाई है। हिंदी के साहित्यकारों ने भारतीय संस्कृति एवं जीवनमूल्यों का चित्रण करके समाज को एक नई दिशा प्रदान की है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में से कहानी (कथा) समाज का उसकी परिस्थितियों, तथा जन—जीवन के चित्रण का सर्वश्रेष्ठ साधन तथा माध्यम है। आधुनिक काल में कहानी को गदय साहित्य की महत्वपूर्ण विधा माना गया है। कहानी के क्षेत्र में अनेक कहानीकारों ने अपनी लेखनी चलाई है। प्रेमचंद्र कहानी के युगप्रवर्तक माने जाते है। उन्होंने कहानी को जीवन दशा की सशक्त अभिव्यक्ति के द्वारा विचार प्रेषण का सशक्त माध्यम माना है। प्रेमचंदोत्तर बाद का कथा साहित्य 'नयी कहानी' विकास की प्रक्रिया से गुजरी है। जिसके वस्तु बीज प्रेमचंद, प्रसाद और यशपाल में है। 'नयी कहानी ने उत्तराधिकार में जो कुछ पाया, उस सबको बिना सोचे, समझे ग्रहण नहीं किया, प्राप्त मूल्यों में से जिसकी संगति उसकी आतंरिक प्रक्रिया की प्रकृति और अपने जीवनबोध के साथ बैठती थी, उसे ही उसने ग्रहण किया है और हर लेखक ने अपने अनुभूत जीवन की निरंतता में से जीवन खंण्डों को उठाकर अभिव्यक्ति दी है। फणीश्वरनाथ रेणु, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव, भीष्म साहनी, हरिशंकर परसाई, अमरकांत, रमेश बक्षी, मार्कण्डेय आदि सशक्त लेखकों ने नयी कहानी को जीवंतता और विविधता दी है। ५

आजादी के बाद के दौर में हिंदी कहानी में जिन रचनाकारों ने नये सामाजिक यथार्थ को अपनी वैचारिक पक्षधरता के साथ चित्रित किया, उनमें कथाकार अमरकांत जी का नाम भी अग्रणी पंक्ति में माना जाता है। जहाँ तक अमरकांत जी के रचनाकाल और रचना प्रक्रिया की बात है तो लगभग ७० साल के लम्बे अन्तराल ने उन्हें अनेक जीवन परिदृश्यों, विभिन्न परिस्थितियों, भिन्न — भिन्न अनुभवों, व बदलते सामाजिक सम्बन्धों से रुबरु करायां। मनुष्य के संघर्षशील आचरण पर आस्था रखनेवाले इस कथाकार की कुछ प्रमुख कृतियाँ है — सूखा पत्ता, काले — उजले दिन, बीच की दीवार, इन्हीं हथियारों से (उपन्यास) जिंदगी और जोंक, देश के लोग, कुहासा, तुफान (कहानी संग्रह) वानर सेवा, खुंटा में दाल हैं, झगरु लाल का फैसला (बाल साहित्य) आदि। प्रस्तुत आलेख में हम अमरकांत संकलित कहानियाँ जिसमें २२ कहानियाँ संकलित की गयी है, जो स्वातंत्रोत्तर कालीन भारतीय नागरिक के जीवनयापन का विश्वासनीय दस्तावेज और कथाकार की जीवन दृष्टि का उदाहरण प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोधपत्र में शब्दमर्यादा का ध्यान रखते हुए हम इस संकलन की इंटरव्यू, दोपहर का भोजन, जिंदगी और जोंक, डिप्टी कलक्टरी, आदि कहानियों पर ही अपनी दृष्टि डालना समीचीन समझुँगा। इस संकलन की इंटरव्यू यह प्रथम कहानी है। प्रस्तुत कहानी मे बेकार नौजवानों का चित्रण है, जो अपनी शिक्षा का मनोरथ हासिल करने के लिए जिला कलेक्टर ऑफिस में इंटरव्यू के लिए आते है। प्रस्तुत कहानी में इंटरव्यु के लिए आए सभी युवकों की मनोव्यथा को कहानीकार इस तरह चित्रित करते है '' सभी के कपडे, मंगनी के या अपने ही सही, या तो नए या धुले — धुलाए थे। छोटे—छोटे दर्जियों के यहां सिले हुए कपडे शरीर से बुरी तरह पेश आ रहे थे! कोट अक्सर छोटे थे और दोनों हाथ ऊँचा करने पर लगी हुई बटनों के टूटने का खतरा पैदा हो जाता था।६ समय बदल रहा है, उसके साथ — साथ मूल्यों में भी परिवर्तन हो रहे हैं। भारतीय समाज ने पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करना सीख लिया है। इसी कारण हमारे मूल्यों में गिरावट आयी है। पारिवारिक

कलह, भ्रष्टाचार, राष्ट्रीय चेतना में कमी आयी है। दिशाभ्रमित नेतृत्व, राजकर्मियों के द्वैध आचरण और सर्वग्राही भ्रष्टाचार ने राष्ट्रीय आर्थिक विकास की बुनियाद को खोंखला बनाकर दिया है। वैश्वीकरण के परिणाम स्वरुप ऊपजी प्रतिस्पर्धा के इस दौर में व्यवसाय में से सत्य, सदाचार, नैतिकता आदि मूल्य कैसे हद्दपार हुए है! कहानीकार के शब्दो में ''इनमें से एक ने अपने हाथों को फैलाते हुए कहा, क्या पढ़ते हो यार। मुझे तो मालूम है, चुना जानेवाला पहले ही चुन लिया गया है। इंटरव्यू तो ढोंग हैं! किसी ने कहा —'इंटरव्यु के लिए उन्हीं को बुलाया जा रहा है, जिनको बुलाने का पहले से ही निश्चय कर लिया गया था।७

प्रस्तुत 'इंटरव्यू' कहानी वर्तमान समय में भी प्रासंगिक बन पडी है। कहानीकार अमरकांत जी ने आलोच्य कहानी में शिक्षा की समस्या, बेकारी, नौकरी की तलाश में दर – ब – दर का भटकाव, जीवन मूल्यों के प्रति समर्पित व्यक्ति का मौका परस्त समझौता वादियों के सम्मुख निरंतर निरस्त होते जाना, व्यावसायिक जीवन की यांत्रिकता, शिक्षा व्यवस्था में फैला भ्रष्टाचार, और दिन – ब—दिन मूल्यों में हो रहा विघटन आदि का मर्मस्पर्शी चित्रण प्रस्तुत किया है।

एक उदाहरण द्रष्टव्य है — ''राशनिंग डिपार्टमेंट तो भ्रष्टाचार का अड्डा है।''एक ने खुशी प्रकट की ''चलो अच्छा हुआ कि नहीं लिए गए!'' '' मंत्री तक खाने लगे हैं, फिर इन छोटे—मोटे अफसरों की क्या बात।'' शंकालु सज्जन ने ऐलान किया, '' अत्याचार बहुत बढ गया है और देहात क जनता बौखला गई है!'' सरकार निकम्मी है। ८ संक्षेप में कहा जाए तो 'इंटरव्यू' यह कहानी जीवन के आस—पास की कडवी मीठी अनुभूति है। भ्रष्टाचार का अत्यंत घिनौना चित्रण के साथ ही, भ्रष्ट अत्याचारी, विवेकहीन, स्वार्थी राजनेताओं और अफसरों की कहानीकार ने पोल खोल दी है।

'दोपहर का भोजन' इस संकलन की दूसरी कहानी है। यह कहानी उस मध्यवर्ग को केंद्र में रखती है, जो न तो उच्चवर्गीय समाज की बराबरी कर सकता है और न ही निम्न वर्ग की जिंदगी जी सकता है। वह हमेशा इन दोनों वर्गों के बीच पिसता रहता है। 'दोपहर का भोजन' कहानी में नारी के नियति को बडे ही यथार्थ धरातल से परखने का प्रयास किया है। कहानी की नायिका सिध्देश्वरी परिवार की साक्षात अन्नपूर्णा है। वह स्वयं त्यागमूर्ति है, वह चंद्रिकाप्रसाद की धर्मपत्नी और तीन संतानों की माँ है। माँ होने के नाते वह परिवार में भाई—भाई तथा पिता — पुत्रों में सौहार्द्र बना रहने के लिए ऐसी बातों को व्यक्त करती है, जिससे परस्पर एक दुसरे के प्रति आत्मीयता और विश्वसनीयता बढ जाती है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है —

'' मुंशीजी ने कटोरे को हाथ में लेकर दाल को थोडा सुडकते हुए पुछा— बडका दिखाई नहीं दे रहा है?''

सिध्देश्वरी की समझ में नही आ रहा था कि उसके दिल में क्या हो गया है! जैसे कुछ काट रहा हो, पंखे को जरा और से घुमाते हुए बोली— ''अभी अभी खाकर काम पर गया है। कह रहा था, कुछ दिनों में नौकरी लग जाएगी। हमेशा—बाबूजी, बाबूजी, किए रहता है। बोला—बाबूजी देवता के समान है।''९

'दोपहर का भोजन' कहानी की नायिका सिध्देश्वरी और उसके पति चंडिका प्रसाद अपनी परिवार की आर्थिक दुर्दशा के कारण एक ही समय दोपहर में ही भोजन करते है, पर एक समय का भोजन भी उन्हें भरपेट नहीं मिलता, रहीं बात सिध्देश्वरी की तो, वह भारतीय नारी की मर्यादाओं को पूरी तरह जानती है और बखुबी निभाती है, इसलिए रसोई बनने पर भी वह पूरे परिवार के पुरुष सदस्यों को भोजन खिलाकर शेष भोज्य सामग्री पर ही संतोष पाती है, तो कभी — कभी भूखे पेट सोना भी उसकी नियति बनती है, सिध्देश्वरी का त्याग, समर्पण की भावना देखकर कवि मैथिलीशरण गुप्तजी की काव्यपंक्तियाँ ''अबला जीवन, हाय! तुम्हारी यही कहानी आँचल में हैं दुध और आँखों में पानी।'' की याद आती है। संक्षेप में दोपहर का भोजन आर्थिक मजबूरियों की कराह की कहानी है।

चंडिकाप्रसाद और दोनों बेटे काम की तलाश में दर–दर भटकते है किंतु कोई काम हाथ नहीं लगता। पुरा परिवार भूखमरी और बेकारी का शिकार है! कहानीकार अमरकांत जी ने 'दोपहर का भोजन' में यथार्थ से जुझते दाम्पत्य जीवन और उनके बच्चों की परेशानियों का जीवित चित्रण किया है। कहानीकार समूची सरकारी अर्थव्यवस्था के चेहरे से झूठे का नकाब हटा देना चाहते है। इनका प्रयत्न है कि समाज सरकारी अर्थव्यवस्था के यथार्थता को अपनी ऑखो से देखें। यही इस कहानी की विशेषता है। वास्तव में कहाजा सकता है कि, अमरकांत जी की कहानियों में मध्यवर्ग, विशेषकर निम्न मध्यवर्ग के जीवनानुभवों और जिजीविषाओं का बेहद प्रभावशाली और अंतरंग चिंतन मिलता है। सुप्रसिध्द आलोचक मधुरेशजी ने अमरकांत जी के रचना विधान के संदर्भ में कहा है — ''अमरकांत की कहानियों का रचना संसार अपने अपने आसपास के जीवन परिवेश से निर्मित है और जीवन का वैविध्य, उसकी ताजगी और अनगढता ही उसकी कहानियों का सबसे बडा आकर्षण भी है। यही कारण है कि अपने समय संदर्भो की जैसी पहचान अमरकांत में दिखाई देती है वह उनके किसी भी दूसरे समकालीन कहानीकार के यहाँ विरल है!''१०

अमरकांत संकलित, कहानियों में तीसरी कहानी 'जिंदगी और जोंक' है जिसमें एक दीन–हीन निराश्रित 'रजुआ' नाम के व्यक्ति की अदम्य जिजीविषा का चित्रण है। रजुआ को सब पीट सकते है, गाली दे सकते है, अपमानित कर सकते है लेकिन उसे चाहे जिस परिस्थिति में डाल दीजिए वह बच निकालता है बिल्कुल भक्त प्रल्हाद की तरह। एक दिन उसकी गल्ली, मोहल्ले में जोर से पिटाई की जाती है। इल्जाम लगाया जाता है शिवनाथ बाबू के घर से साडी चुराने का, इसी समय कुछ समय अंतराल के बाद शिवनाथ बाबू का लडका साडी घर में ही होने की खबर देता है, तो 'रजुआ' की पिटाई बंद होती है। शिवनाथ बाबू लेखक को अपनी बाई ऑख को खुबी से दबाते हुए, दात खोलकर हॅस पडते है, और कहते है — ''चलिए साहब, जीच और जींबू को दबानेसे ही रस निकलता है।''११

'जिंदगी और जोंक' कहानी उस संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के अमानवीय पक्ष को रेखांकित करती है, जिसमें आज भी एक वर्ग अपने स्वार्थ के लिए दूसरे वर्ग के आदमी का पदार्थवत इस्तेमाल करता है, उसे आदमी की तरह जीने का अवसर प्रदान नहीं करता। आलोच कहानी में कहानीकार ने समाज में हो रहे नैतिक मूल्यों के ऱ्हास को 'रजुआ' के माध्यम से विवेचित किया है। डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी के अनुसार ''अमरकांत जी की कहानियाँ द्वंदात्मक दृष्टि से परस्पर विरोधी स्थितियों का समाहार कर पाने की शक्ति से रचित है। इसी अर्थ में वे प्रेमचंद लिखित कहानी 'कफन' की परंपरा में आते है। घीसू और माधव का सजातीय पात्र 'जिंदगी और जोंक' का रजुआ है। जिंदगी इसको पीस रही है और यह भी इतना बेहया और जिंदगी प्रूफ है कि उसमें से कुछ न कुछ रस अपने जीने भर को निकाल ही लेता है! जिंदगी इसको चूस रही है, और यह जिंदगी को चूस रहा है।''१२

'जिंदगी और जोंक' पूरी कहानी में पतनशील सामाजिक व्यवस्था की यथार्थ झलक मिलती है! तमाम सर्वहारा वर्ग की नियति ही 'रजुआ' की नियति है। 'रजुआ' एक व्यक्ति नहीं, पूरा वर्ग है, जो जिंदगी को पूरी तरह जीना चाहता है परंतु समाज का एक ऐसा वर्ग भी है, जो उसे जीने नहीं देना चाहता। प्रस्तुत कहानी में अमरकांत जी ने 'रजुआ' जैसे दीन–हीन व्यक्ति के जिंदगी की यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत की है। पूरी कहानी में पतनशील सामंती सामाजिक व्यवस्था की यथार्थ झलक मिलती है। कहानीकार यह सत्य भी स्वीकारते है कि भारतीय समाज में पोषित जोंक वृत्ति पर अंकुश लगाये बिना धर्म, जाति, संप्रदाय, वर्ग, प्रदेशगत श्रेष्ठता, हीनता के रुढ प्रतिमानो को ध्वस्त किए बिना रामराज्य की कल्पना साकार नहीं हो सकती। जिस रामराज्य की संकल्पना स्वतंत्र भारत में कॉंग्रेस राज्य में की गई थी, उसकी सही परख मजदूरों और किसानों के जीवन के आधार पर आसानी से की जा

सकती है। यों भी हिंदुस्थान की व्यापक जनता जिन परिस्थितियों से गुजरती है उनमें बेकारी और भूखमरी की समस्याएँ 'रजुआ' जैसे आम बात है! इनके लिए रामराज्य की कल्पना निरर्थक है! ऐसे रामराज्य पर प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल जी ने ठीक ही लिखा है —

''आग लगे इस राम —राज में — ढोलक मढती है अमीर की/चमडी बनजी है, गरीब की रोटी रुठी कौर छिना है/थाली सूनी अन्न बिना है/ पेट धँसा है राम — राज में/आग लगे इस रामराज में। १३

'डिप्टी कलक्टरी' कहानी के मुख्य पात्र शकलदीप बाबू है, और उनके बडे बेटे नारायण बी.ए. (स्नातक) पास हो चुका है। पिता की बेटे के प्रति आशा आकांक्षाएँ एवं उम्मीद है कि वह मेहनत करके एक दिन जरुर कलेक्टर बन जाएगा। इन्हीं विचारों से बेटे का कमरा ठिक ठाक करते है उसे खाने में उँचा दर्जा का मेवा, घी, इतना ही नहीं कभी कभी जरुरत पडने पर सिगरेट का बक्सा भी पत्नी के हाथ में सौंप देते है। शकलदीप बाबू बेटे की शान — शौकत में पूरा सहयोग देते है, भगवान से प्रार्थना की जाती है, ६००रुपयों का कर्जा लेकर बेटे की फीस भी भर दी जाती है — यथा — ''शकलदीप बाबू ने खांस कर कहा — ''सुनती हो, यह डेढ सौ रुपये अलग रख लो। करीब सौ रुपये बबुआ की फीस में लगेंगे और पचास रुपये अलग रख देना, कोई और काम आ पडे।''१४

कुछ दिन बाद नारायण को इलाहाबाद को इंटरव्यू के लिए बुलाया जाता है, इसके इंटरव्यू का नतीजा एक परिचित व्यक्ति मास्टर जंगबहादूर सिंह ने बताया कि — ''कोई खास बात नहीं है। अरे, उनका नाम तो है ही, यह है कि जरा नीचे है। दस लडके लिए जाएँगे, लेकिन मेरा ख्याल है कि उनका नाम सोलहवाँ, सत्रहवाँ पडेगा।''१५ शकलदीप बाबू हताश होकर मंदिर से घर वापस लौटते है। उनके मन में शंकाएँ होती है कि कहीं पत्नी जमुना ने बेटे नारायण को ६०० रुपयों की कर्जे की बात कही हो, और उसका पढाई मे मन न लगने से कलक्टरी का सपना पूरा नहीं हुआ हो, ... के संदर्भ में पत्नी से बात करते हैं, और नारायण के बारे में पुछते है। जब उन्हें नारायण अंधेरी खोली में छाती पर हाथ रखकर सोया हुआ मिलता है, तो वे घबरा जाते है, वे नारायण की हालचाल न होते देखकर भयभीत होकर काँपते हृदय से अपना बायां कान नारायण के मुख से बिल्कुल नजदीक जाकर उसकी सांसो को नियमित रुप से चलते देखते है। तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता। कहानिकार शकलदीप बाबु के माध्यम से समझाते है कि सर सलामत तो पगडी पचास, इस कहावत के अनुसार वर्तमान जीवन हो रहे छात्रों की आत्महत्याएँ, विफलता, अभिभावकों की बढती जिज्ञासाएँ आदि बातों पर कहानीकार ने अपनी दृष्टि डाली है।

प्रस्तुत कहानी एक मध्यवर्ग को लेकर चलती है। माता—पिता बच्चे के संदर्भ में कलक्टरी का सपना देखते हुए, उनका पुत्र उन सपनों को चकनाचुर कर देता है, फिर भी अपने बेटे के पराभव के बावजुद भी सही सलामत रहना उन्हें आनंददायी अनुभव देता है। आलोच्य कहानी में अमरकांतजी ने निम्न मध्यवर्गीय जीवन का आर्थिक परिस्थितियों की जूझन पीडाओं व जीवन को भूख का जो सटीक और मार्मिक चयण किया है। वह अपने आप में बेजोड है।

निष्कर्ष —

कथाकार अमरकांतजी एक मानवतावादी लेखक है! मानवीय मूल्यों में संपृक्त होने के कारण ही उन्होंने एक ऐसे समाज की परिकल्पना की है, जिसमें शोषण न होकर सत्य, अहिंसा, सेवा, प्रेमभावना और संहृदयता का राज्य हो, उन्होंने अपनी कहानियों में मानवीय मूल्यों का प्रतिमान स्थापित करने की चेष्टा की है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। वे हिंदी कथा साहित्य को जीवन की गहरी अनुभूतियों से जोड लेनेवाले श्रेष्ठ लेखक है। इन सब कहानियों को पढने से पता चलता है कि अमरकांत जी कहीं न — कही प्रेमचंद से प्रभावित तो थे ही! अमरकांत जी ने समाज, परिवार से बहुरंगी रंगो को प्रस्तुत किया है। इन रंगों से जहाँ

एक तरफ उन्होंने अपनी लेखनी सजाई, वहीं दूसरी तरफ 'साहित्य समाज का दर्पण होता है' उन्हीं को भी चरितार्थ किया है।

संदर्भ —

१. व्यक्ति और स्रष्टा — डॉ. शंभुनाथ सिंह — पृ. ९२
२. नयी कविता स्वरुप और समस्याएँ — डॉ. जगदीश गुप्त — पृ — २२
३. वागर्थ — अगस्त २०१२, अंक २०५, संपा. कुसुम खेमानी — पृ — ५
४. साहित्य समीक्षा — बाबु गुलाबराय— पृ. १८
५. नयी कहानी की भूमिका — कमलेश्वर, पृ. ३६
६. अमरकांत संकलित कहानिया — 'इंटरव्यू' — पृ. ५
७. वहीं — पृ. ६
८. वही — पृ. ८
९. 'दोपहर का भोजन' — अमरकांत संकलित कहानियाँ — पृ. १४
१०. अमरकांत के कृतित्व एवं व्यक्तित्व की पडताल — संपा. ममता कलिया, रविंद्र कलिया, नरेश सक्सेना — पृ. १५७
११. जिंदगी और जोंक' — अमरकांत संकलित कहानियाँ — पृ. १९
१२. जिंदगी और जोंक' — अमरकांत संकलित कहानियाँ — पृ. ८
१३. संचयिता — केदारनाथ अग्रवाल, संपादक डॉ. अशोक त्रिपाठी — पृ. १२१
१४. डिप्टी कलेक्टरी' — अमरकांत — पृ. ३९
१५. 'डिप्टी कलेक्टरी' — अमरकांत — पृ. ५९

11

उदय प्रकाश की 'तिरिछ' कहानी में जीवन मूल्य

प्रा. तांबे दिपाली दत्तात्रय
पद्मश्री विखे पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, प्रवरानगर

****

मनुष्य जीवन और जीवन मूल्य में गहरा संबंध है। मनुष्य जीवन को जीवन मूल्यों ने प्रभावित एवं उन्नत किया है। इसलिए साहित्य जगत् अछुता कैसे रह सकता है? क्योंकि साहित्य को तो समाज का दर्पण कहा जाता है। 'मूल्य' एक बहुचर्चित शब्द है। समाज में जहाँ मूल्य आपस में टकराते है, वही नए मूल्यों का निर्माण होता है। वर्तमान के भौतिक युग में जीवन—मूल्य में परिवर्तन दिखाई दे रहा है। पुराने मूल्यों के प्रति विद्रोह और नए मूल्यों के प्रति आग्रह बढ़ रहा है। पारिवारिक संबंधों में अजनबीपन आने लगा है। जिसके चलते पारिवारिक संबंधों में आत्मीयता का अभाव, विवाह विच्छेद, बड़ो के प्रति स्नेह का अभाव, पुरानी और नई पीढ़ी का संघर्ष आदि दिखाई देने लगा है। मनुष्य जीवन को सफल बनाने के लिए मूल्यों आवश्यकता है। आज के परिवेश तथा शास्त्र में मूल्यों का महत्व बहुमूखी हो गया है। मूल्य जीवन जीने का तरिका एवं दृष्टीकोन है। साहित्य और मानवीय मूल्यों को स्पष्ट करते हुए धर्मवीर भारती लिखते है—''साहित्य मनुष्य का ही कृतित्व है और मानवीय चेतना के बहुविध प्रत्यन्तरों में से एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रत्युत्तर है। इसीलिए हम आधुनिक साहित्य के बहुत से पक्षों को या आयामों को केवल तभी बहुत अच्छी तरह समझा सकते है जब हम उन्हें मानव—मूल्यों के इस व्यापक संकट के संदर्भ में देखने की चेष्टा करें।''१ मानवीय